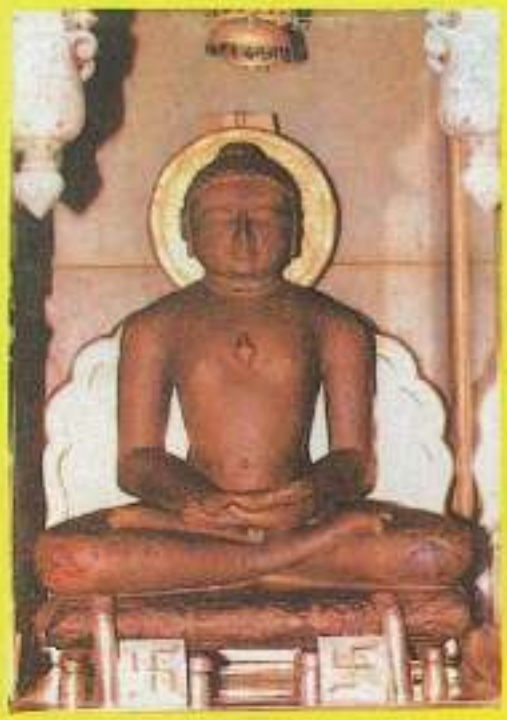


टीले वाले बाबा

जैन चित्र कथा



टीले वाले बाबा

सम्पादकीय

टीले वाले बाबा का मन्दिर चांदनपुर गांव के अति निकट है। भगवान महावीर की जिस मूर्ति के अतिशय की ख्याति पूरे विश्व में है। भूगर्भ से उसकी प्राप्ति के सम्बंध में अद्भुत किंवदन्ती प्रचलित है। कहा जाता है कि एक ग्वाला रोज गया चराने जाता था, गाय जंगल से चर कर जब घर लौटती तो उसके स्तन से दूध खाली मिलते। एक दिन ग्वाले ने गाय का पीछा किया और देख कर विस्मय हुआ कि गाय एक टीले पर खड़ी है उसके स्तनों मे दूध स्वत: झर रहा है। दूसरे दिन मन में अनेक प्रकार के तानों बानों से ग्वाले ने टीले को खोदना प्रारम्भ किया कि आवाज सुनाई दी जरा! सावधानी से खोद। आवाज सुन कर वह सावधान हो गया। और मिट्टी हटाते ही मूर्ति प्रगट हो गई। भूगर्भ से भगवान प्रगट हुए हैं, इस प्रकार की चर्चा चारों ओर फैल गई। दूर-दूर से दर्शनार्थी खिंचकर आने लगे। मेला जुड़ने लगा। अतिशयों से आकर्षित हो कर अनेक व्यक्ति मनोकामनाएं ले कर आने लगे, उन व्यक्तियों की मनोकामना पूर्ण होने के समाचार चारों दिशाओं में फैल गया। अमर चंद जी दीवान ने मन्दिर निर्माण कराया तथा रथ में बैठाकर ले जाने लगे तो रथ अचल हो गया। जब ग्वाले ने रथ को हाथ लगाया तब रथ आगे बढ़ा तथा समारोह पूर्वक श्री जी मन्दिर में ला कर विराजमान किए। महावीर जी की यात्रा के लिए जाने वाले नर नारियों के मन में एक अद्भुत स्फुरणा, उमंग और पुण्य भावना उत्पन्न होती है।

यहाँ हर वर्ग के भक्त जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने और अपने श्रद्धासुमन चढ़ाने आते हैं।

अतिशय क्षेत्र में अनेक दर्शनीय स्थल भी है। मन्दिर जी के उत्तरीय भाग में कृष्णा बाई जी का आश्रम है जहां पर विशाल मन्दिर भी है। इस पावन तीर्थ के दर्शन के साथ काँच का ऐतिहासिक पार्श्वनाथ मन्दिर एवं ब्र. कमला बाई जी द्वारा स्थापित आदर्श महिला विद्यालय भी अद्वितीय है। गम्भीर नदी के पूर्वी किनारे पर शान्तिवीर नगर है। जहां २८ फुट ऊंची शान्तिनाथ स्वामी की विशाल मूर्ति के अतिरिक्त २४ तीर्थंकरों तथा उनके शासन देवताओं की मूर्तियाँ विराजमान है। जिसकी यश: पताका चारों ओर फैल रही है। हम सब इस कृति से वहां के दर्शन करें।

पाठकों से अनुरोध है कि वे जैन चित्र कथा के सदस्य बन कर सम्यक ज्ञान का अनुभव करें।

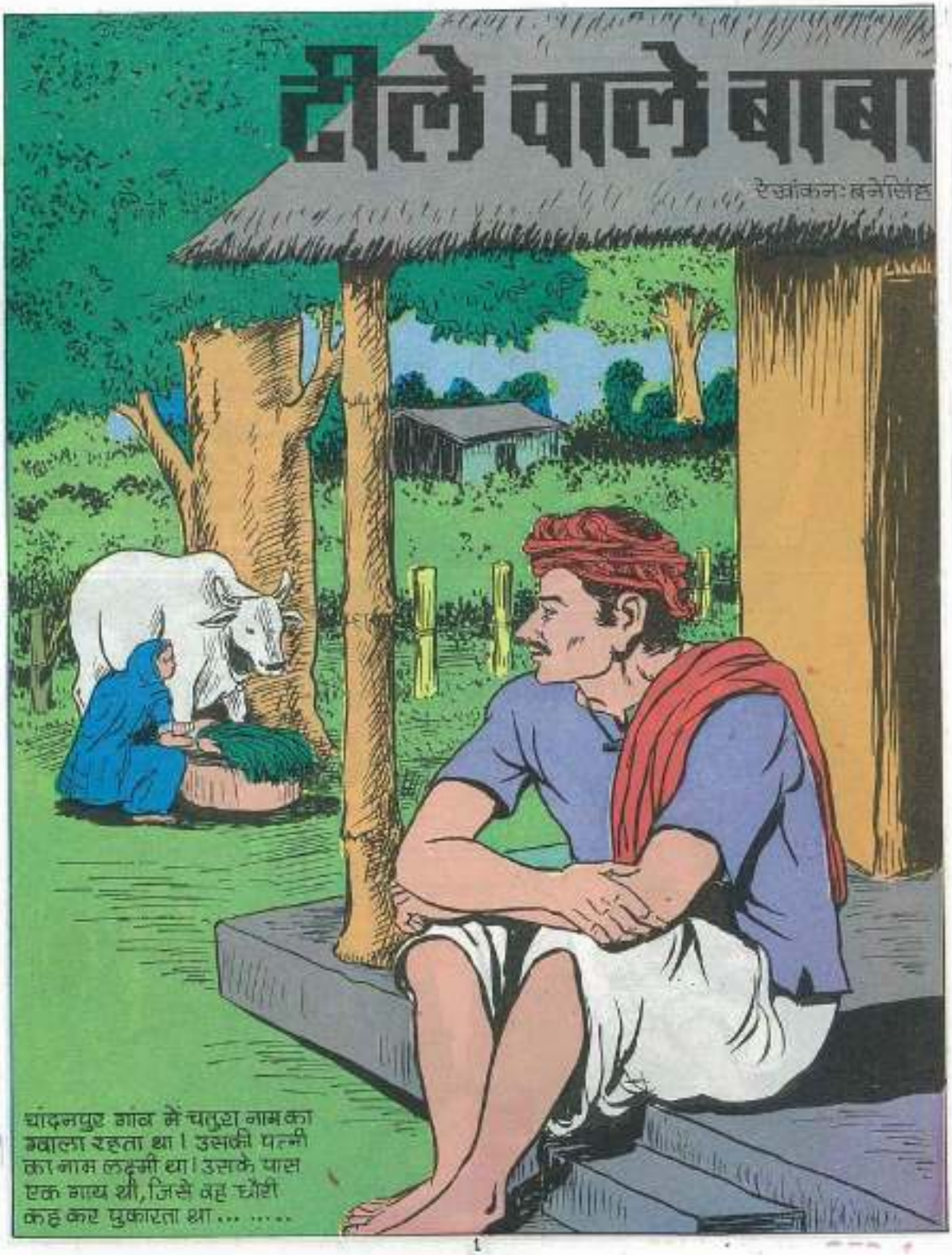
धर्मचंद शास्त्री

प्रकाशक :- आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला गोधा सदन अलसीसर हाऊस संसार चंद रोड जयपुर
सम्पादक :- धर्मचंद शास्त्री
लेखक :- श्री मिश्रीलाल जी एडवोकेट गुना
चित्रकार :- बनेसिंह जयपुर
प्रकाशन वर्ष १९८८ **मई** वर्ष २ अंक ७ मूल्य : १० रुपये

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक धर्मचंद शास्त्री द्वारा जुबली प्रेस से छप कर धर्मचंद शास्त्री ने गोधा सदन अलसीसर हाऊस संसार चंद रोड जयपुर से प्रकाशित की।

टीले वाले बाबा

ऐक्रांकन: बनेसिंह



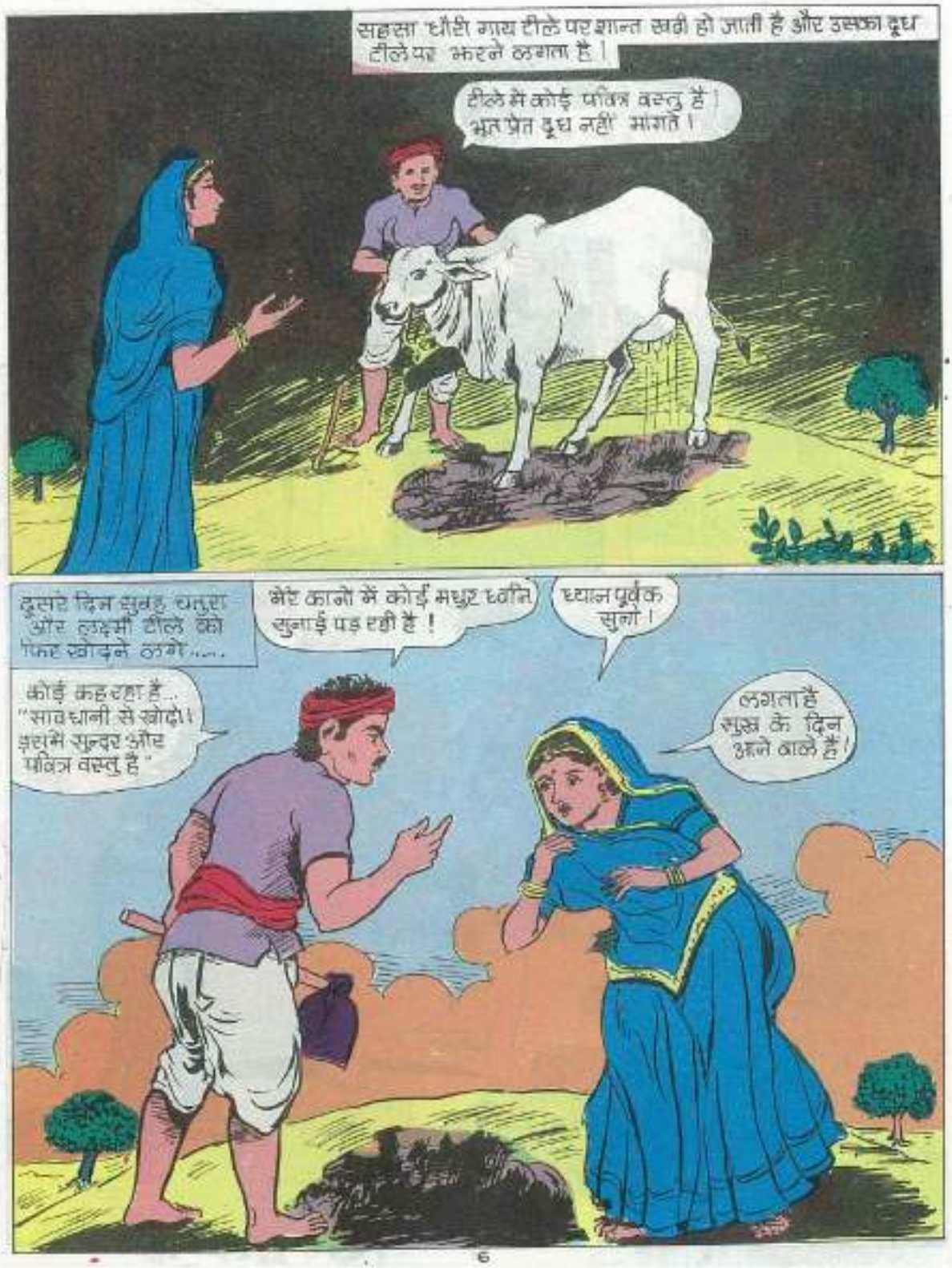
चांदनपुर गांव में चतुरा नाम का ग्वाला रहता था। उसकी पत्नी का नाम लक्ष्मी था। उसके पास एक गाय थी, जिसे वह चौरी कह कर पुकारता था ... ...

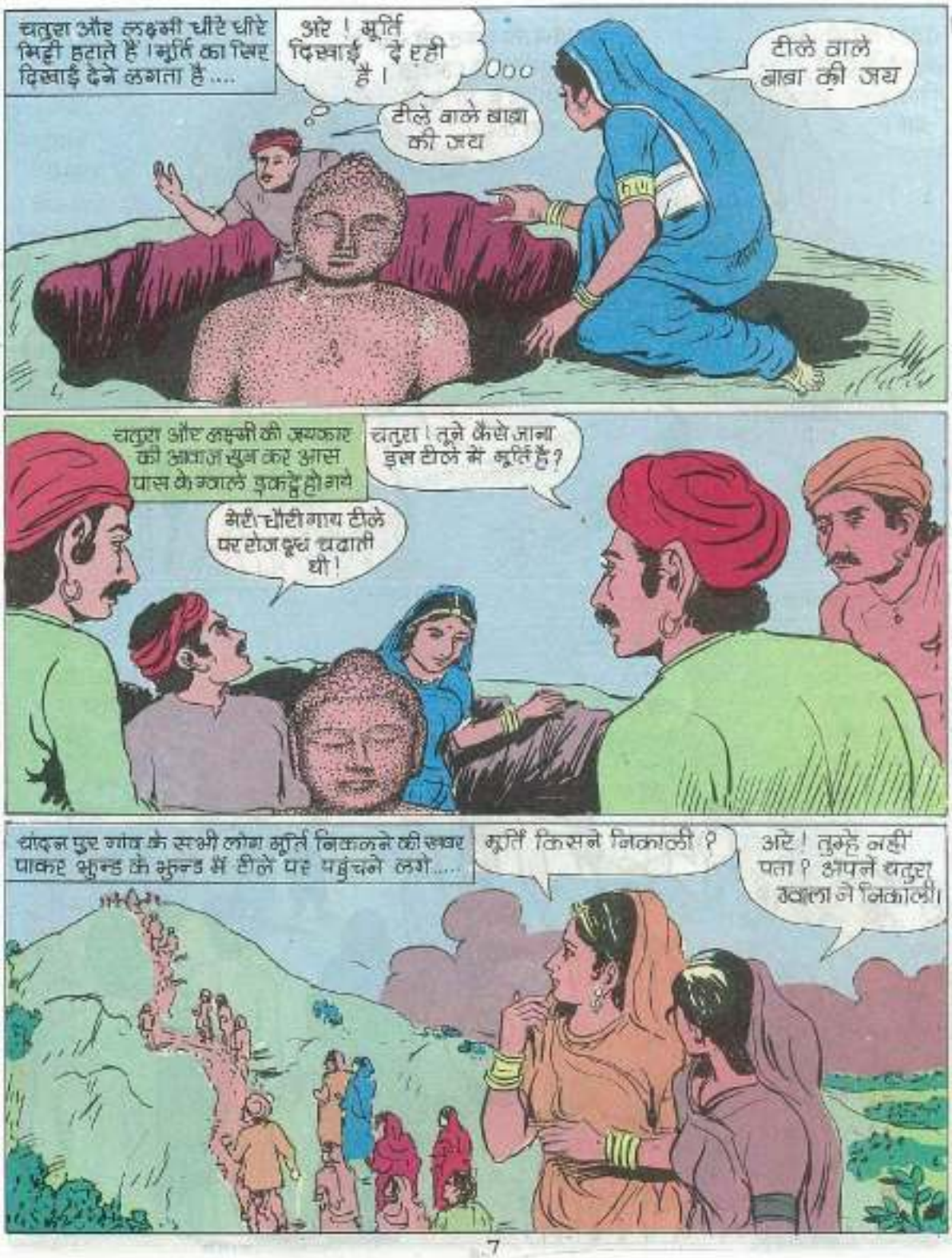

क्या आज गाय का दूध लगाना भूल गये
गाय के थनों में दूध हो तो निकालूं
गाय के थनों से एक बूंद भी दूध नहीं निकलता...चतुरा हैरान है ... ...
कैसी बातें करते हो? अपने गांव में दूध की चोरी कौन करेगा?
मैं कल सुबह गाय की खिप कर रख वाली करूंगा। मैं देखूंगा दूध की चोरी कौन करता है।

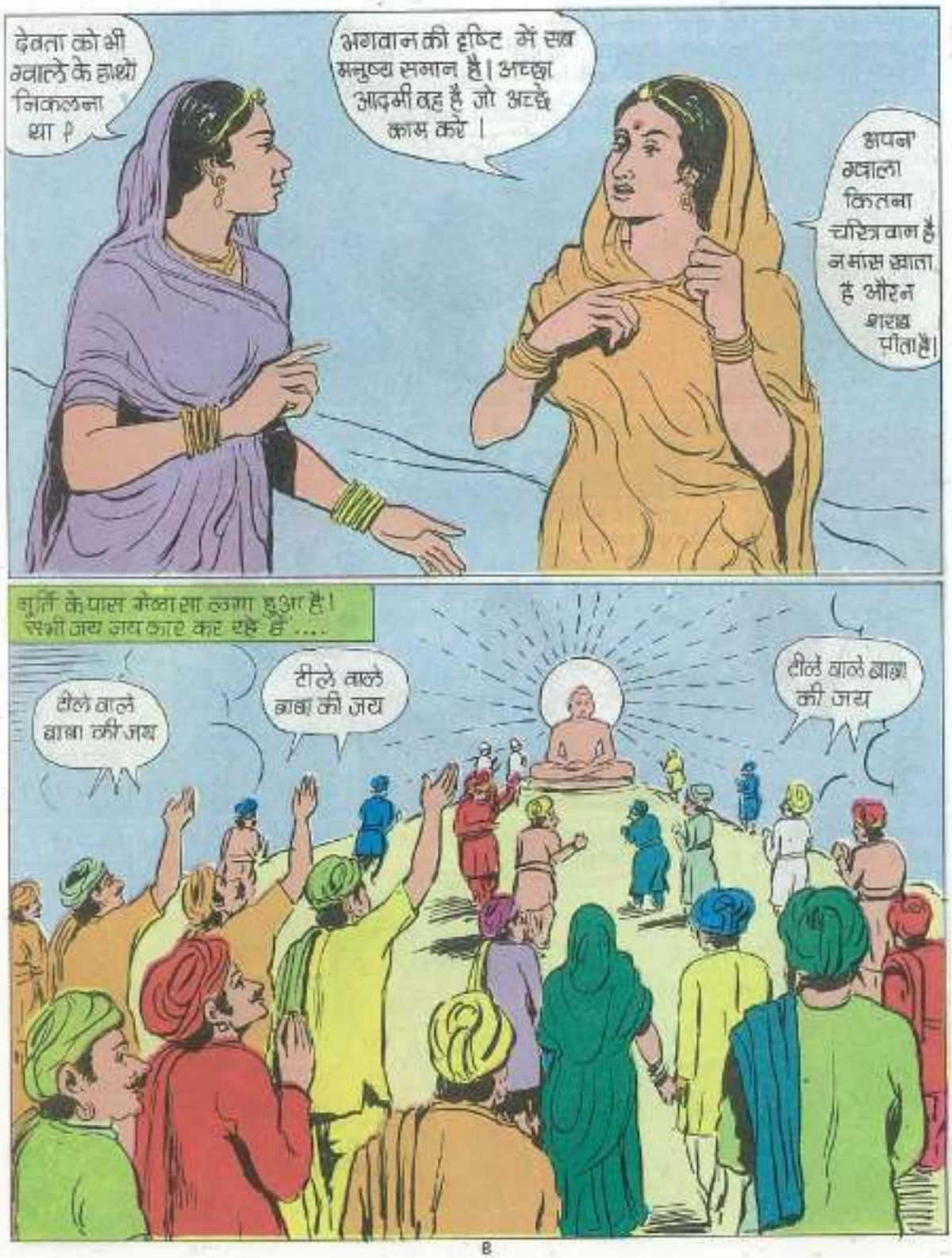

आज का दिन भी बेकार गया....
छिप कर चतुरा जंगल में लट्ठ लिए गाय की रखवाली करता रहा। दिन भर गाय चरती रही संध्या के समय एक टीले पर आ कर खड़ी हो गई और उसका सारा दूध टीले पर झर गया।
अरे! आश्चर्य बिना लगाये ही गाय का दूध टीले पर गिर रहा है।
चतुरा घर लौट कर पत्नी से कहता है
भाग्यवान! पता लगा लिया कि गाय का दूध कहां जाता है।
केवल पता लगा कर ही लौट आये, इतना बड़ा लट्ठ किसलिए ले गये थे? कौन है दूध चोर?

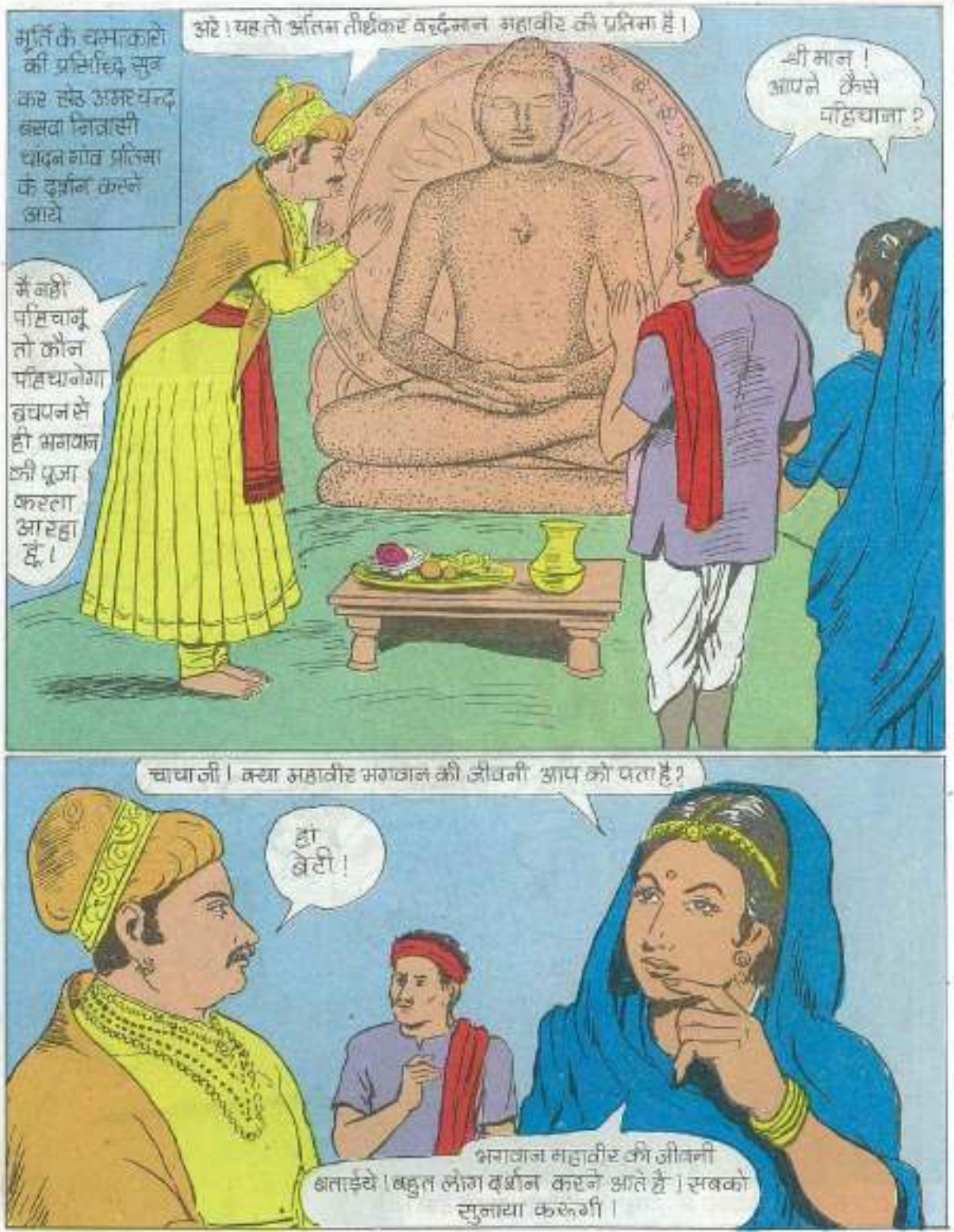

व्यर्थ बोलने लगी हो, मेरी भी तो सुन।
अच्छा सुनाओ।
एक टीले पर गाय का दूध अपने आप भरे आता है।
मैं सच कहता हूं
ऐसी अनहोनी घटना तो मैंने जीवन में कभी नहीं सुनी। क्यों झूठ बोलते हो?
मैं कल जाकर टीले की खुदाई करूंगा
मैं तुम्हें वहां नहीं जाने दूंगी। मुझे तो भूत-प्रेत का चक्कर समझ में आता है।

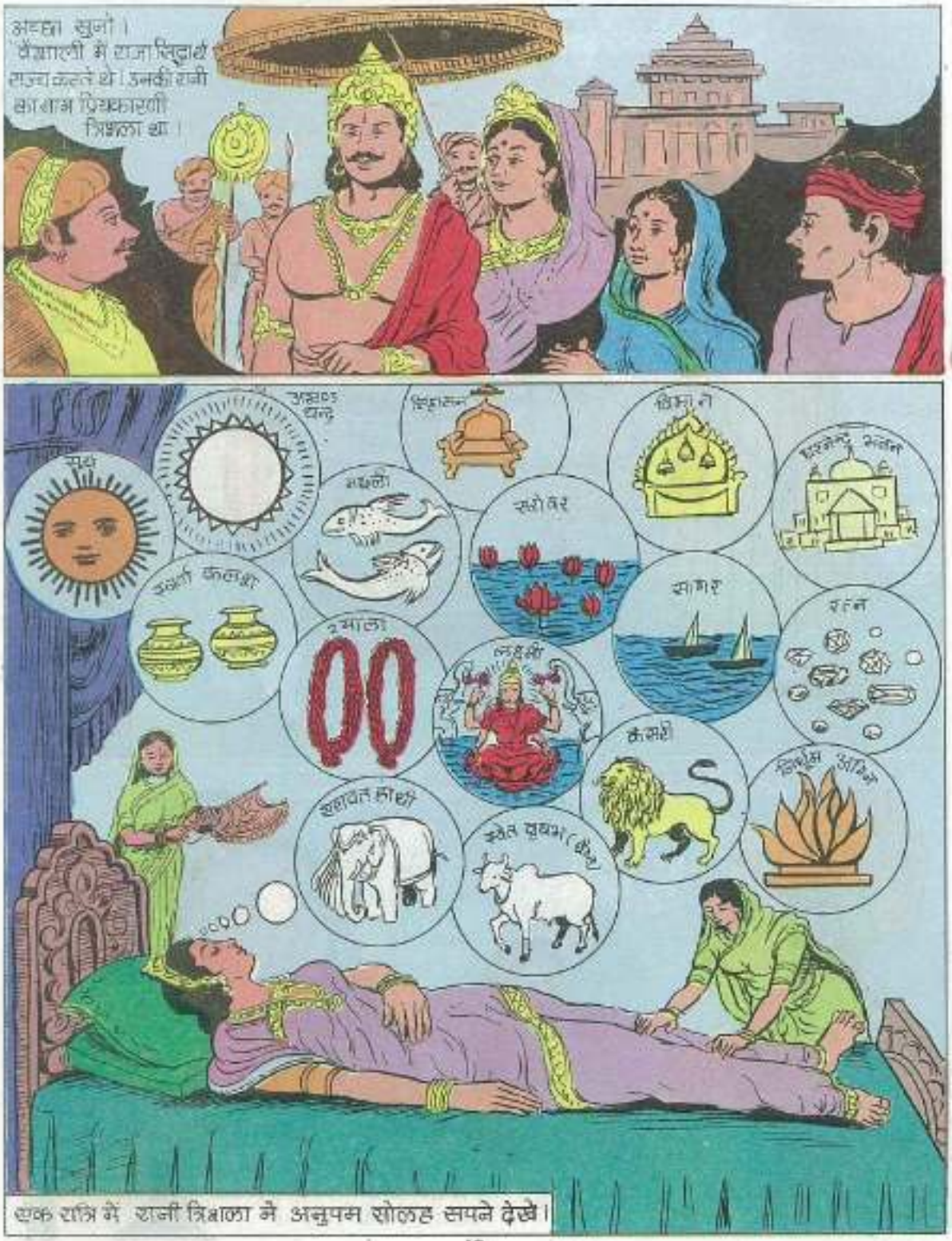

भय का भूत होता है। मैं भूत प्रेतों से नहीं डरता।
अकेले तो नहीं जाने दूंगी।
तुम भी चलना। दोनों मिल कर टीले को खोदेंगे।
दूसरे दिन सुबह लक्ष्मी और चतुरा टीले को खोदने लगे.... संध्या हुई
अब लौट चलो, आज इतना ही काफी है।


सहसा धौरी गाय टीले पर शान्त खड़ी हो जाती है और उसका दूध टीले पर झरने लगता है।
टीले में कोई पवित्र वस्तु है। भूत प्रेत दूध नहीं माँगते।
दूसरे दिन सुबह चतुरा और लक्ष्मी टीले को फिर खोदने लगे.....
मेरे कानों में कोई मधुर ध्वनि सुनाई पड़ रही है!
ध्यान पूर्वक सुनो।
कोई कह रहा है... "सावधानी से खोदो। इसमें सुन्दर और पवित्र वस्तु है"
लगता है सुख के दिन आने वाले हैं।

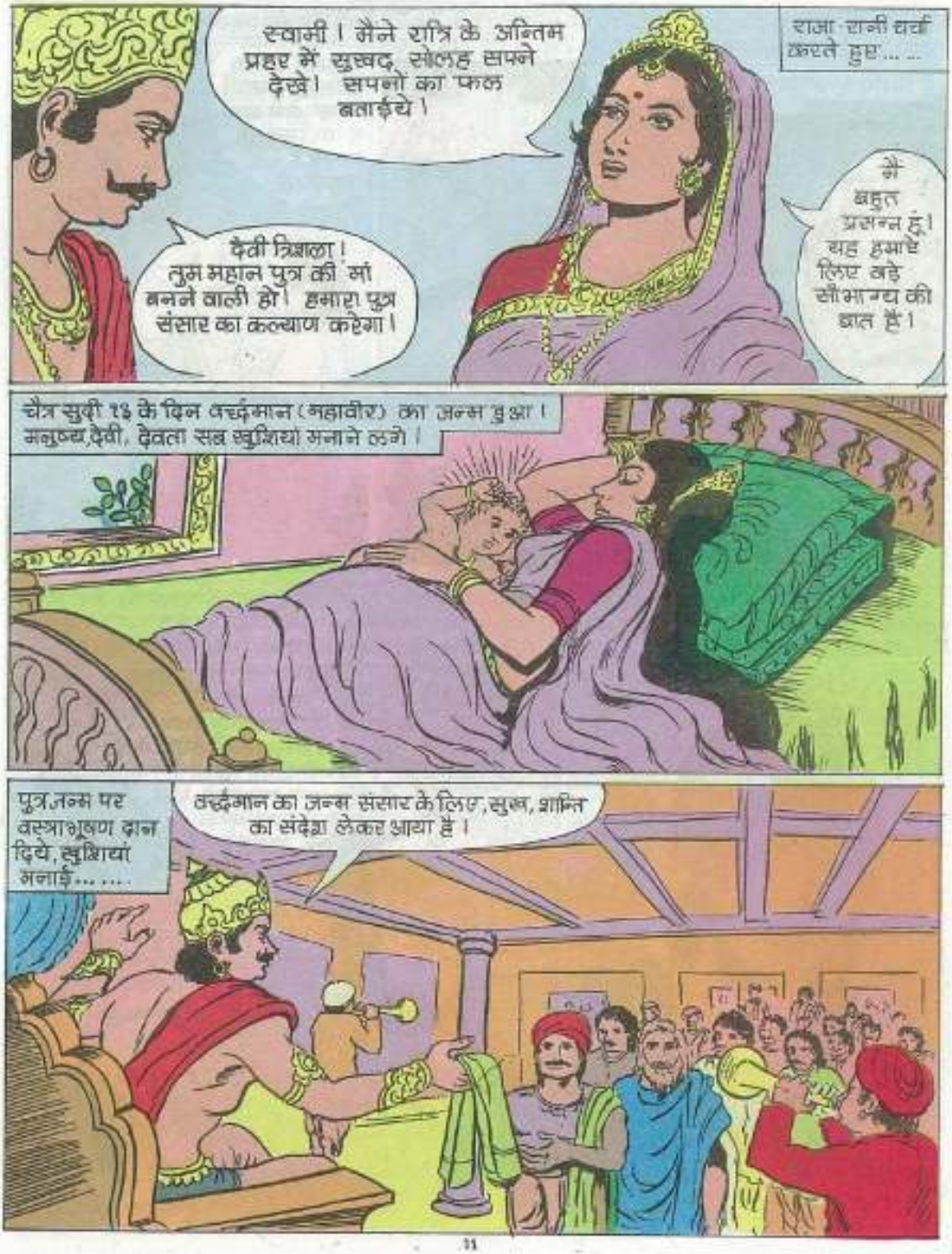

चतुरा और लक्ष्मी धीरे धीरे मिट्टी हटाते हैं। मूर्ति का सिर दिखाई देने लगता है....
अरे ! मूर्ति दिखाई दे रही है।
टीले वाले बाबा की जय
टीले वाले बाबा की जय
चतुरा और लक्ष्मी की जयकार की आवाज़ सुन कर आस पास के गवाले इकट्ठे हो गये
चतुरा ! तूने कैसे जाना इस टीले में मूर्ति है ?
मेरी चौदी गाय टीले पर रोज दूध चढ़ाती थी !
चांदन पुर गांव के सभी लोग मूर्ति निकलने की खबर पाकर झुन्ड के झुन्ड में टीले पर पहुंचने लगे.....
मूर्ति किसने निकाली ?
अरे ! तुम्हे नहीं पता ? अपने चतुरा ग्वाला ने निकाली।


देवता को भी ग्वाले के हाथों निकलना था ?
भगवान की दृष्टि में सब मनुष्य समान है। अच्छा आदमी वह है जो अच्छे काम करे।
अपना ग्वाला कितना चरित्रवान है न मांस खाता है और न शराब पीता है।
मूर्ति के पास मेला सा लगा हुआ है। सभी जय जयकार कर रहे हैं ....
टीले वाले बाबा की जय
टीले वाले बाबा की जय
टीले वाले बाबा की जय


मूर्ति के चमत्कारों की प्रसिद्धि सुन कर सेठ अमरचन्द बसवा निवासी चांदन गांव प्रतिमा के दर्शन करने आये
अरे ! यह तो अंतिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर की प्रतिमा है।
श्रीमान ! आपने कैसे पहिचाना ?
मैं नहीं पहिचानूं तो कौन पहिचानेगा बचपन से ही भगवान की पूजा करता आ रहा हूँ।
चाचा जी ! क्या महावीर भगवान की जीवनी आप को पता है ?
हां बेटी !
भगवान महावीर की जीवनी बताईये ! बहुत लोग दर्शन करने आते हैं ! सबको सुनाया करूंगी !



एक रात्रि में रानी त्रिशला ने अनुपम सोलह सपने देखे।


स्वामी ! मैंने रात्रि के अन्तिम प्रहर में सुखद, सोलह सपने देखे। सपनों का फल बताईये।
राजा रानी चर्चा करते हुए.....
देवी त्रिशला ! तुम महान पुत्र की मां बनने वाली हो। हमारा पुत्र संसार का कल्याण करेगा।
मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।
चैत्र सुदी १३ के दिन वर्द्धमान (महावीर) का जन्म हुआ। मनुष्य,देवी, देवता सब खुशियां मनाने लगे।
पुत्र जन्म पर वस्त्राभूषण दान दिये, खुशियां मनाई.....
वर्द्धमान का जन्म संसार के लिए, सुख, शान्ति का संदेश लेकर आया है।

एक दिन राजकुमार वर्द्धमान बगीचे में अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। एक भयंकर सर्प निकला, सारे बच्चे भाग गये... पर

मैं निर्भय हूं। कायरता धर्म नहीं है।

सर्प ने देवता का रूप धारण किया और कहा।

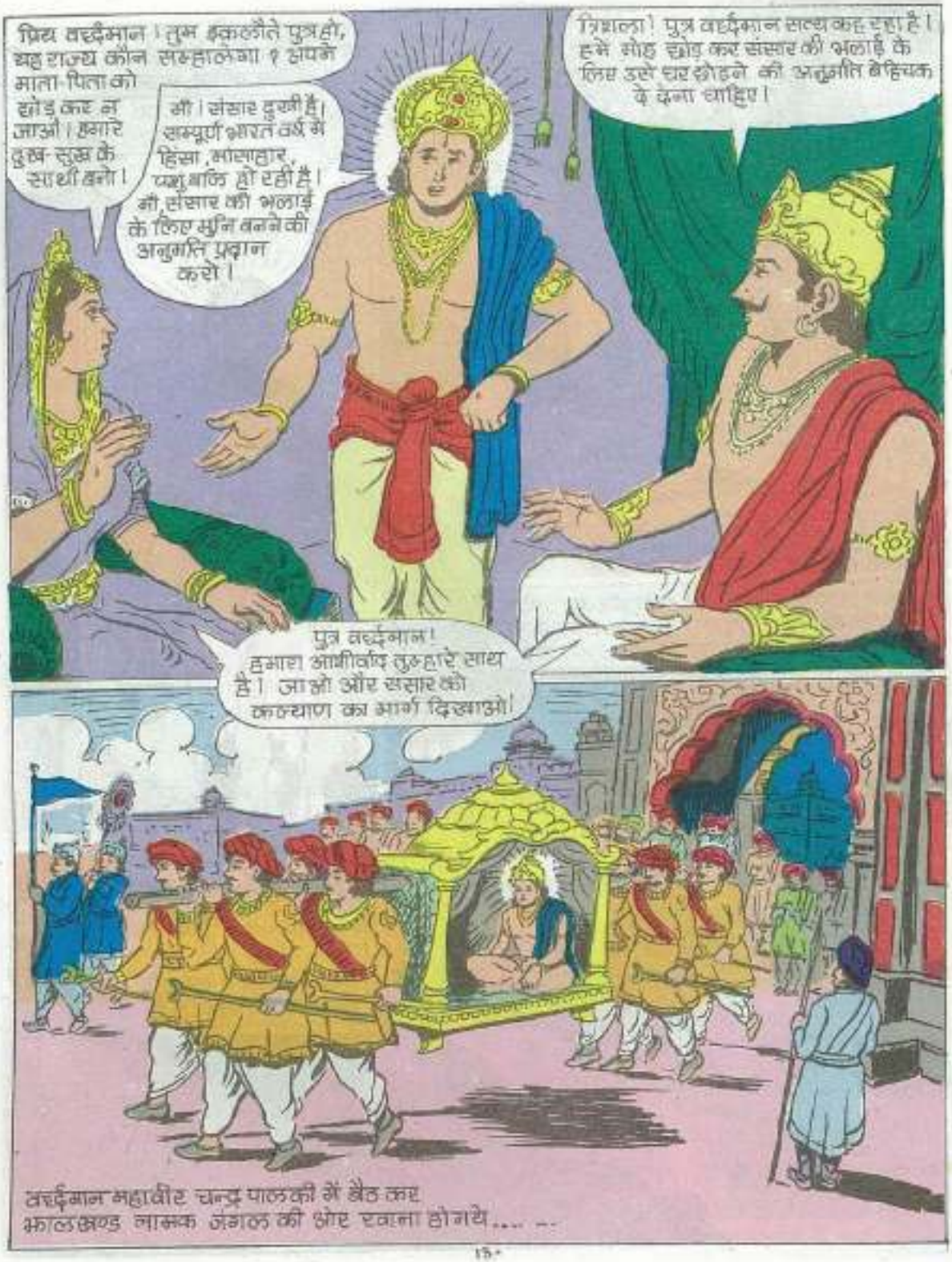
मैं संगम नामक देवता हूं। तुम्हारी परीक्षा लेने आया था। वर्द्धमान तुम वास्तव में महावीर हो।

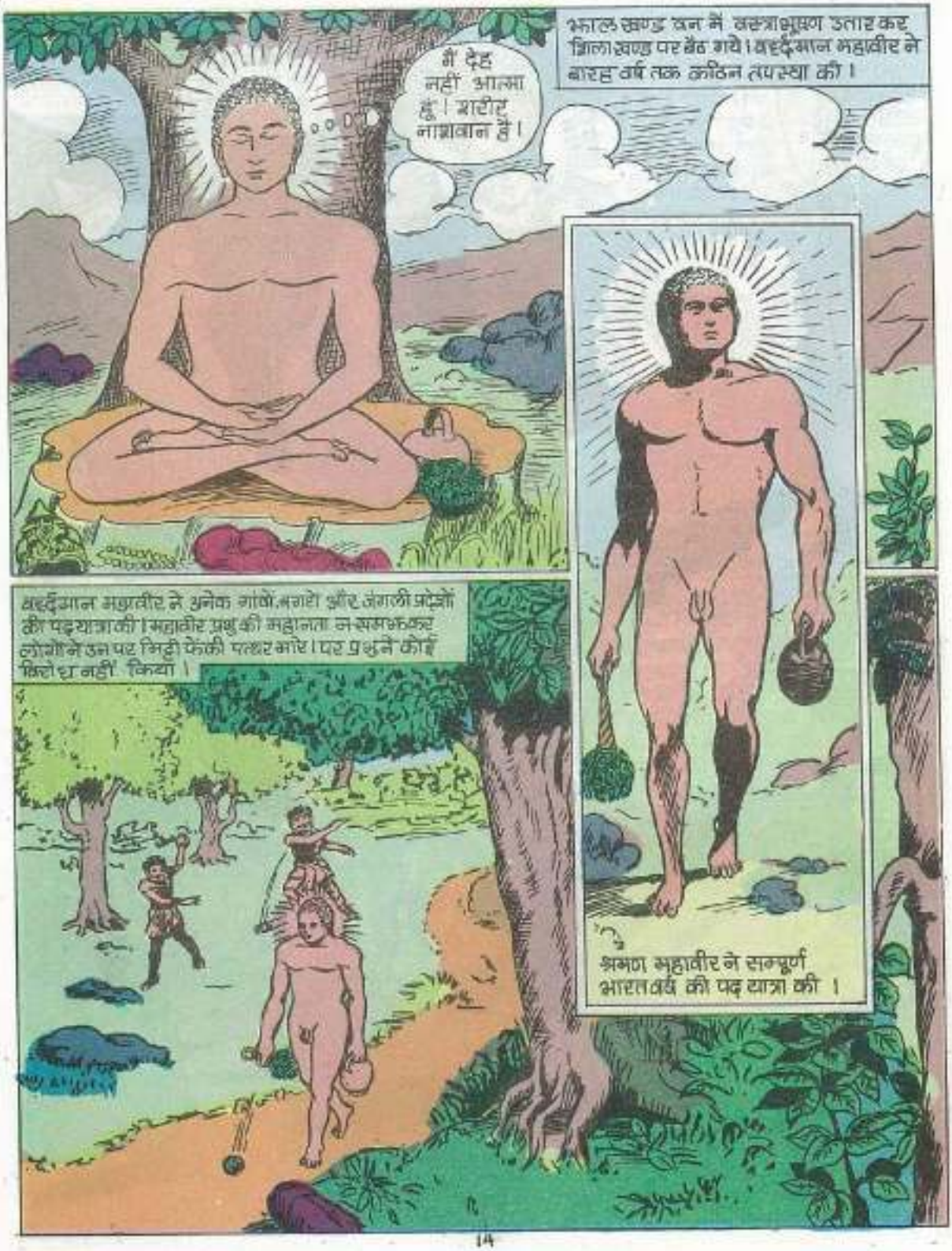
महान कार्य करने के कारण वर्द्धमान को महावीर, वीर, सन्मति, अतिवीर आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला तथा राजा सिद्धार्थ से बात करते हैं

पुत्र! तुम्हारी विवाह योग्य आयु हो गई है। हम यशोदा नामक सुन्दर राजकुमारी से तुम्हारा विवाह करना चाहते हैं।

मां! पिताजी! मेरे लिए विवाह बंधन के समान है। मैं संसार के प्राणियों की भलाई के लिए, आत्म कल्याण के लिए सन्यासी बनना चाहता हूं।


प्रिय वर्द्धमान ! तुम इकलौते पुत्र हो, यह राज्य कौन सम्हालेगा ? अपने माता-पिता को छोड़ कर न जाओ ! हमारे दुख-सुख के साथी बनो !
माँ ! संसार दुखी है ! सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिंसा, भ्रष्टाचार, पशु बलि हो रही है ! माँ, संसार की भलाई के लिए मुनि बनने की अनुमति प्रदान करो !
त्रिशला ! पुत्र वर्द्धमान सच्चा कह रहा है ! हमें मोह छोड़ कर संसार की भलाई के लिए उसे घर छोड़ने की अनुमति हँसते के देना चाहिए !
पुत्र वर्द्धमान ! हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है ! जाओ और संसार को कल्याण का मार्ग दिखाओ !
वर्द्धमान महावीर चन्द्र पालकी में बैठ कर ज्ञातखण्ड नामक जंगल की ओर रवाना होते हैं.... --


मैं देह नहीं आत्मा हूँ। शरीर नाशवान है।
भाल खण्ड वन में वस्त्राभूषण उतार कर शिला खण्ड पर बैठ गये। वर्द्धमान महावीर ने बारह वर्ष तक कठिन तपस्या की।
श्रमण महावीर ने सम्पूर्ण भारतवर्ष की पद यात्रा की।
वर्द्धमान महावीर ने अनेक गांवों, नगरों और जंगली प्रदेशों की पद यात्राकी। महावीर प्रभु की महानता न समझकर लोगों ने उन पर मिट्टी फेंकी पत्थर मारे। पर प्रभुने कोई विरोध नहीं किया।


उज्जयिनी के श्मशान में गर्दभमुस्तक नामक राक्षस ने श्रमण महावीर को डराने की कोशिश की पर वह निडर रहे।
ऋजुकूला नदी के किनारे महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त किया उनके मस्तक केशरी और फैला प्रकाश इसका प्रमाण है
हाँ बेटी!
महान बनने के लिए आदमी को कठिन तपस्या करनी पड़ती है। बहुत कठिन।
भगवान ने केवलज्ञान प्राप्त किया उसके आगे की कथा सुनाईये।
केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद 30 वर्ष तक भगवान महावीर ने संसार की भलाई के लिए उपदेश दिया।

भगवान महावीर के कुछ उपदेश भी हमें बताईये

प्राणी मात्र पर दया करना
गरीबो की सहायता करना
इस प्रकार हिंसा, झूठ, चोरी
कुशील और परिग्रह का
त्याग करना ही महावीर के
प्रमुख उपदेश है।

पदयात्रा करते हुए तीर्थंकर महावीर पावा पहुंचे और एक बगीचे के तालाब के समीप जा कर ध्यान मग्न हो गये।

भगवान महावीर की देह से एक ज्योति निकली और ऊपर जाकर आकाश में विलीन हो गई, देह भी विलीन हो गई। और निर्वाण को प्राप्त हुए वह जन्म मृत्यु के बंधन से मुक्त हो गये

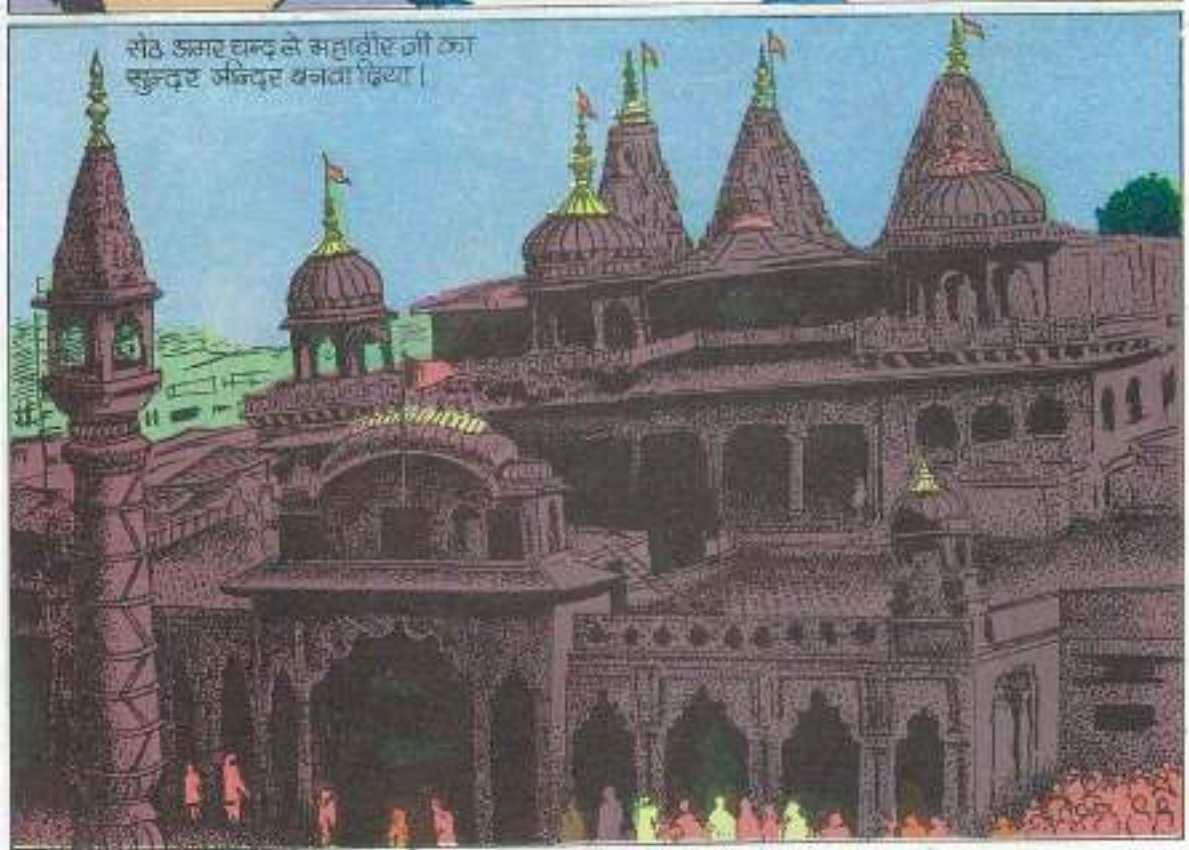
ऐसी घटनाएं मेरे अन्तिक से चित्र की भांति दिख रही है।

मैं बहुत गरीब आदमी हूं, आज की रोजी से संजय ही नहीं मिलता।

यह बहुत महान देवता है, चतुरा। तू इनका मंदिर बनवा दे।

मंदिर बन जाना तो जरूरी है, तू नहीं बनवा सकता तो मैं मंदिर बनवा देता हूं।


श्रीमान की जैसी इच्छा
मैं मंदिर नहीं बनवाने दूंगी, देवता पराये हो जायेंगे।
देवता कब तक बिना मंदिर के रहेंगे?
भगवान जाने।
लक्ष्मी! सेठ जी सच्चा कहते हैं, बाबा बरसात गर्मी सर्दी में ऐसे कब तक रहेंगे?
मुझे तुम्हारी बात सुन कर बहुत सुख मिला। मैं जल्दी ही बड़ा सुन्दर मन्दिर बनवाऊंगा।

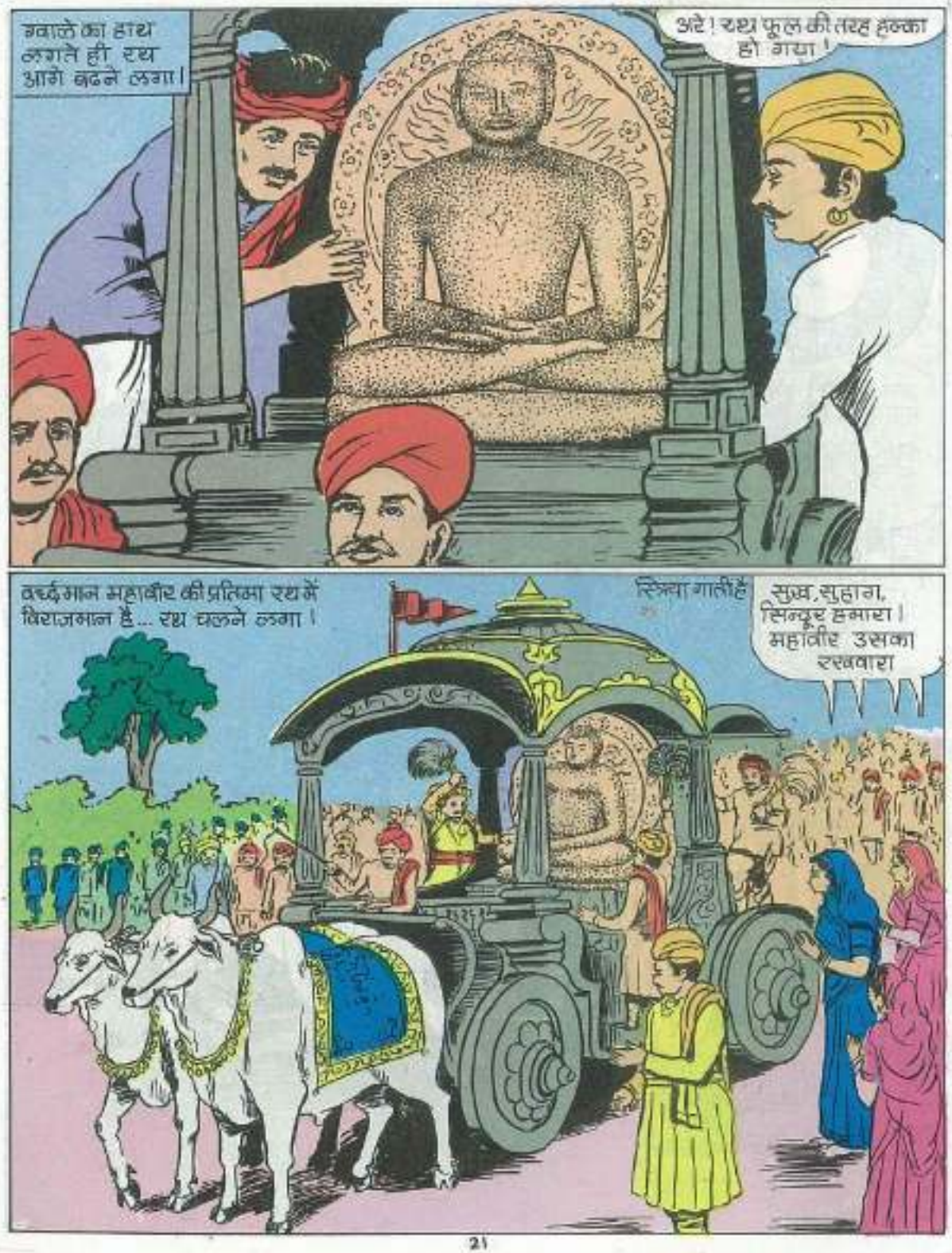

सेठ अमरचन्द ने महावीर जी का सुन्दर मन्दिर बनवा दिया।

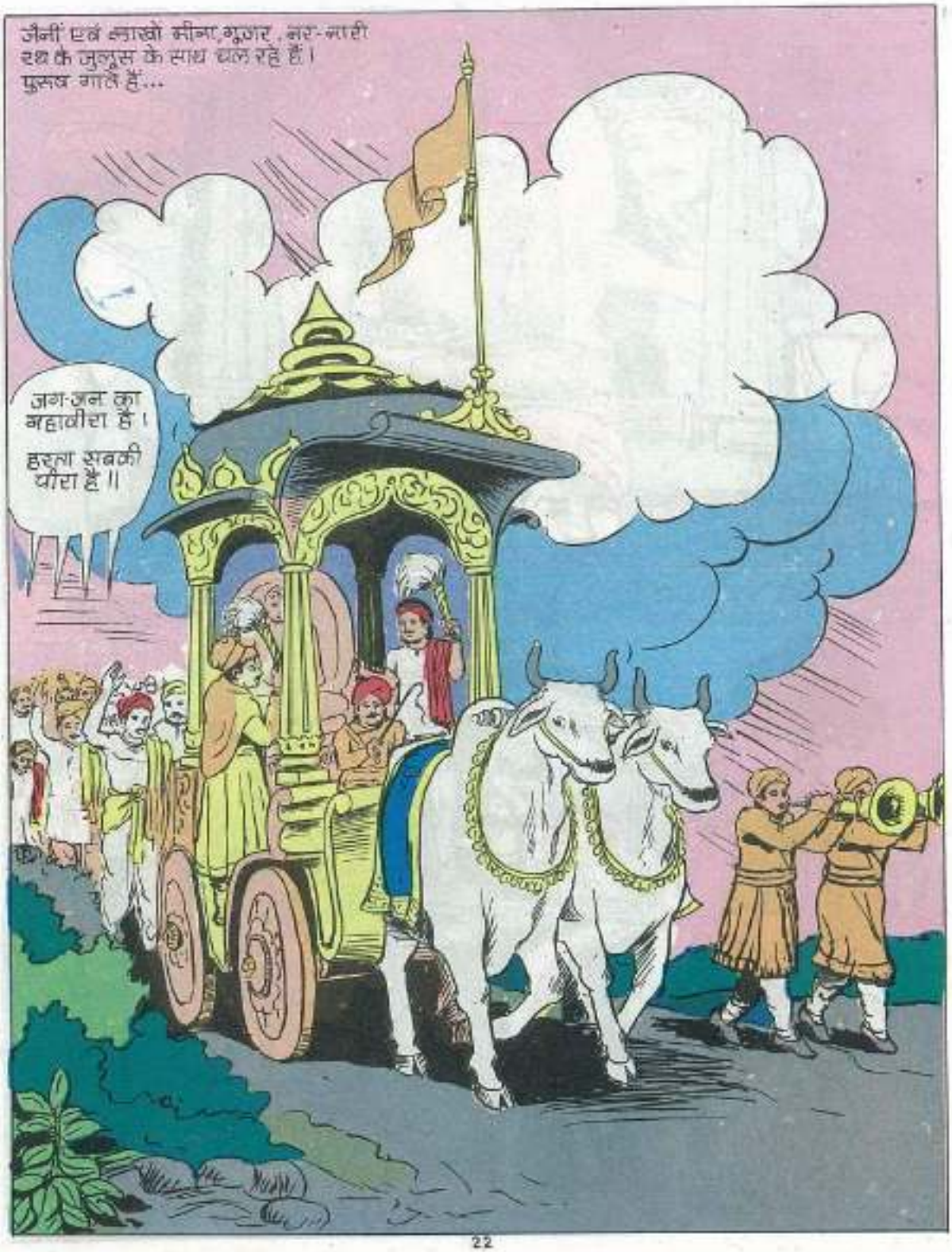

टीले के सामने बैलों से जुता रथ तैयार खड़ा है, लाखों लोग यात्रा की भीड़ लगी है। सभी लोग भगवान महावीर की जय जयकार कर रहे हैं।
टीले वाले बाबा की जय
भगवान महावीर की जय

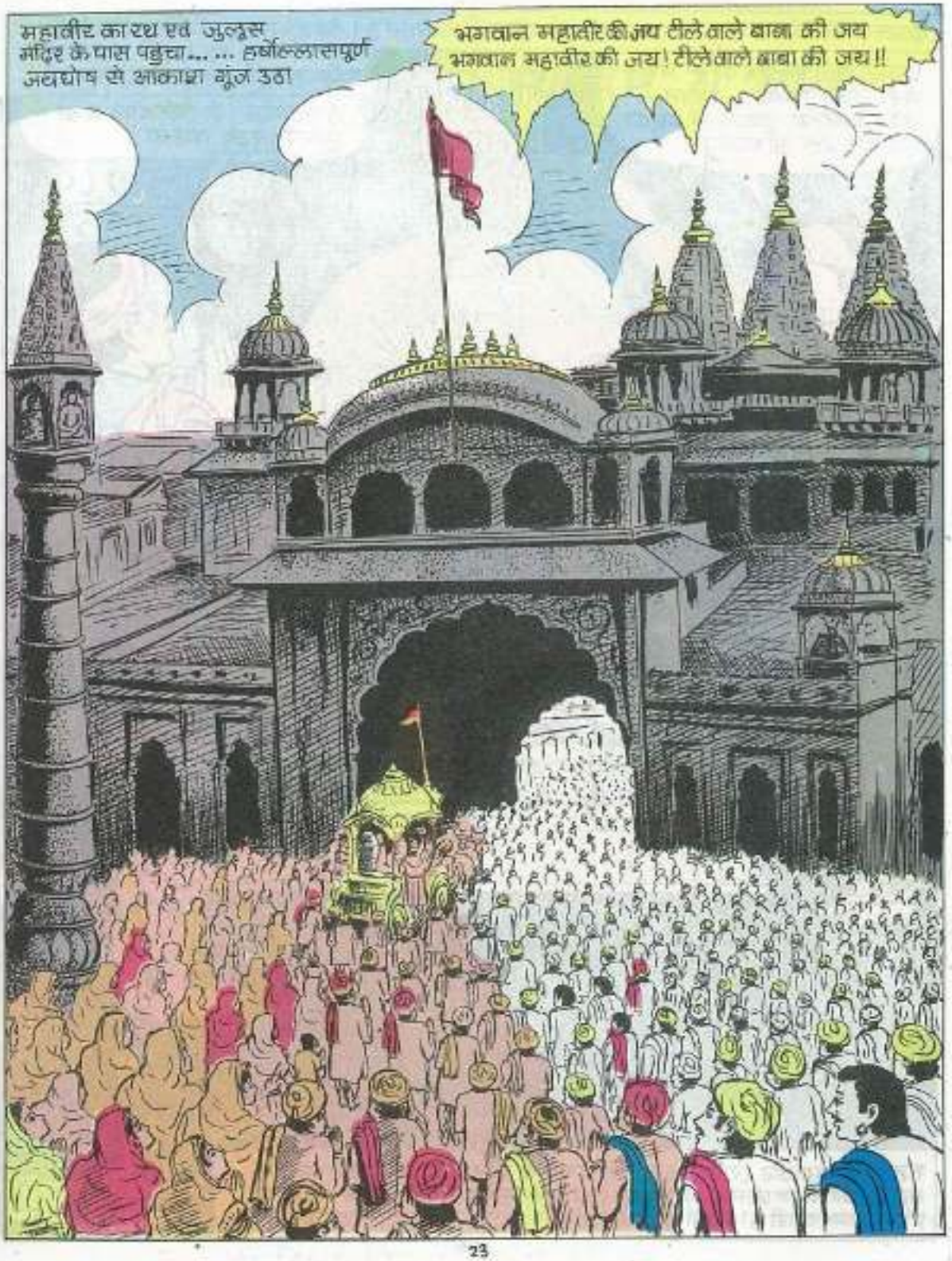

मूर्ति को रथ में विराजमान किया... समीप ही सेठ अमरचन्द व अन्य गणमान्य व्यक्ति खड़े हैं। सभी आश्चर्यचकित हैं.....
अरे! ये क्या? रथ अचल हो गया। चलता ही नहीं।
अरे! आज चतुरा नहीं दिख रहा है?
चतुरा वर्षों से बड़े बाबा की सेवा कर रहा है। उसकी इच्छा के बिना मूर्ति मन्दिर से कैसे जायेगी?

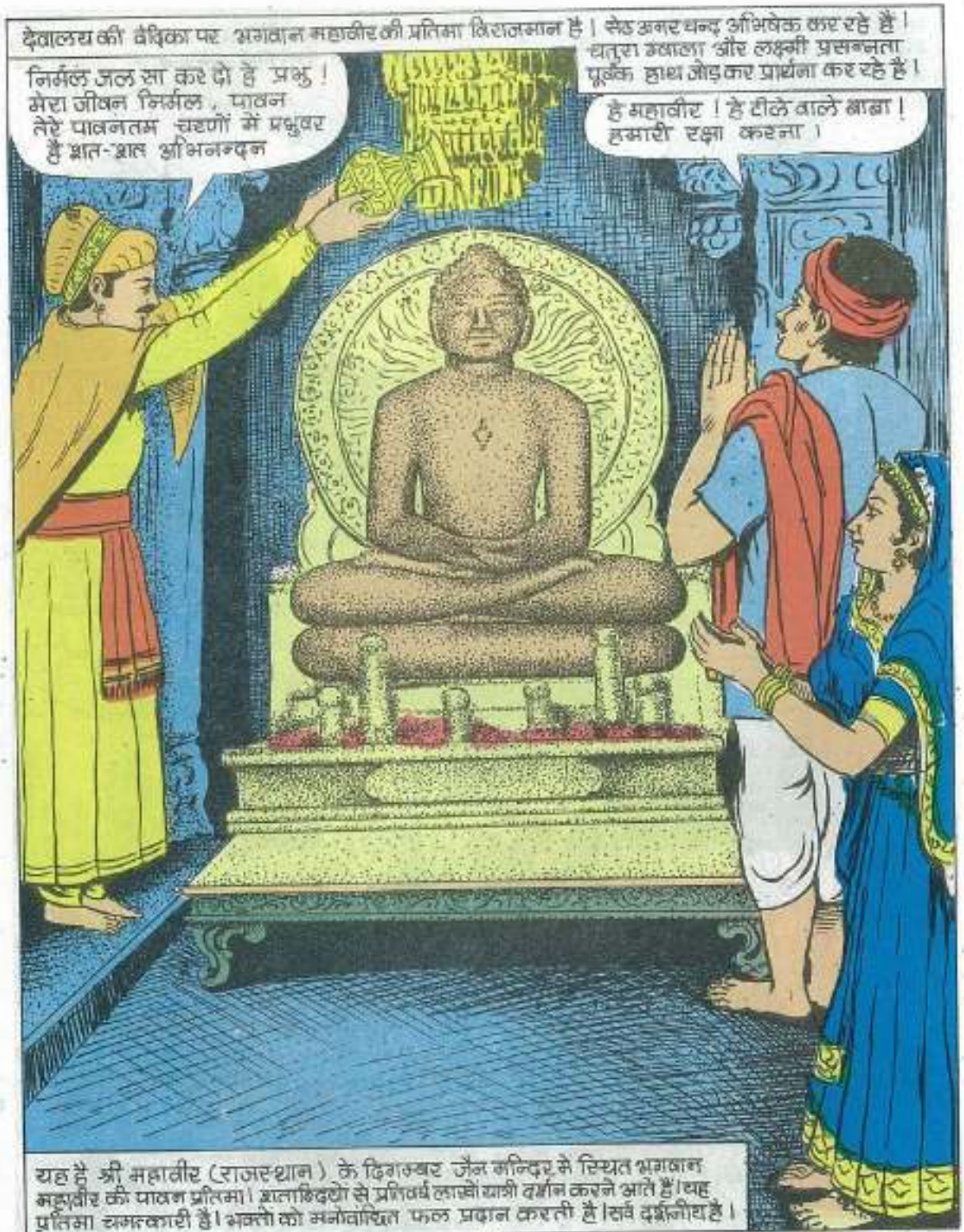

सेठजी चतुरा के घर जाते हैं
चतुरा! ओ चतुरा!
सेठ जी घर के भीतर प्रवेश करते हैं और कहते हैं
मडैया से बाबा के जाते ही मैं अनाथ हो जाऊंगा
चतुरा, खुशी के समय क्यों दुखी हो रहा है? क्या बड़े बाबा को मंदिर में नहीं बैठायेगा?


श्री मान मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं? मन्दिर आपने बनवाया है। कल से हम मीना गूजरों को मन्दिर में कौन जाने देगा ?
मैं सबके सामने घोषणा करूंगा कि मन्दिर में मीना गूजरों को जाने से कोई नहीं रोकेगा।
मैंने तो पहिले ही कहा था देवता पराये हो जावेंगे
महावीर सब का देवता है केवल जैनियों का नहीं।
श्री मान ! अब हम में कोई दुख नहीं है


ग्वाले का हाथ लगते ही रथ आगे बढने लगा।
अरे! रथ फूल की तरह हल्का हो गया!
वर्द्धमान महावीर की प्रतिमा रथ में विराजमान है... रथ चलने लगा।
स्त्रिया गाती है
सुख, सुहाग, सिन्दूर हमारा। महावीर उसका रखवारा


जैनी एवं लाखों मीना गूजर, नर-नारी रथ के जुलूस के साथ चल रहे हैं। पुरुष गाते हैं...
जग-जन का महावीरा है। हरता सबकी पीरा है॥


महावीर का रथ एवं जुलूस मंदिर के पास पहुंचा..... हर्षोल्लासपूर्ण जयघोष से आकाश गूंज उठा
भगवान महावीर की जय टीले वाले बाबा की जय
भगवान महावीर की जय! टीले वाले बाबा की जय!!


देवालय की वेदिका पर भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान है। सेठ अमर चन्द अभिषेक कर रहे हैं। चतुरा ग्वाला और लक्ष्मी प्रसन्नता पूर्वक हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर रहे हैं।
निर्मल जल सा कर दो हे प्रभु! मेरा जीवन निर्मल, पावन तेरे पावनतम चरणों में प्रभुवर है शत-शत अभिनन्दन
हे महावीर! हे टीले वाले बाबा! हमारी रक्षा करना।
यह है श्री महावीर (राजस्थान) के दिगम्बर जैन मन्दिर में स्थित भगवान महावीर की पावन प्रतिमा। शताब्दियों से प्रतिवर्ष लाखों यात्री दर्शन करने आते हैं। यह प्रतिमा चमत्कारी है। भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान करती है। सर्व दर्शनीय है।

जैन चित्र कथा के माध्यम से बाल पीढ़ी का समग्र विकास

भगवान महावीर के सिद्धान्तों एवं उपदेशों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर जन साधारण के हृदय में नैतिक सदाचार व मानवीय मूल्यों की पुन: स्थापना करने; देव, गुरु, शास्त्र के प्रति कर्तव्य का बोध करा कर धर्म प्रभावना व संस्कृति संरक्षणं के लिए नयी पीढ़ी को अच्छी शिक्षा देने हेतु आधुनिक शैली में कथा साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है। जैन पुराणों में असंख्य कथाएँ हैं–उनमें से अधिकांश उपयोगी व सुबोध कथाओं को चित्र कथा के माध्यम से प्रकाशित किया जा रहा है–जिसे अत्याधिक सरस व लालित्यपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है। ये कथाएँ बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके हृदय को उदार व विशुद्ध बनाती हैं तो कहीं बुद्धि में स्फूर्ति का संचार करती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि धर्म के अंकुर, बच्चों के सरल हृदय में सदैव के लिए जड़ जमा लेते हैं। निश्चय ही ये बच्चे धर्म का पालन करते हुए मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता व अभिभावक गण एक बार जैन चित्र कथा को अपने बालकों के हाथ में रख कर देखें–बालकों को आनन्द से पढ़ते देखकर वे अवश्य धन्यता का अनुभव करेंगे।

प्रकाशन सहयोगी

श्री विजय जैन दरियागज दिल्ली

श्री जय गोपाल राजीव जैन चावड़ी बाजार दिल्ली.

जैनाचार्यों द्वारा लिखित सत्य कथाओं पर आधारित

जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुरुचिवर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने बाली एक मात्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी के लिए उपयोगी अनमोल रत्नों का खजाना, जैन चित्र कथा को आप स्वयं पढे तथा दूसरों को भी पढ़ावे।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद

फोन 05762-66074